

# एक टेस्ट से डिटेक्ट होंगे 57 डिस्ऑर्डर

सीमा शर्मा ॥ मुंबई: राहुल अभी पांच महीने का है और पूरी तरह ठीक है, लेकिन उसके पैरेंट्स अगर समय रहते न्यू बोन स्क्रीनिंग नहीं करवाते तो उन्हें पता ही नहीं चलता कि उनका बच्चा हाई टीएसडी (थाइरॉयड स्टीम्यूलेशन हॉर्मोन) से पीड़ित है।



इसकी वजह से उसकी ग्रोथ रेट तो कम होती ही, उसका आईक्यू लेवल भी कम होता। अगर समय पर इलाज न किया जाता तो वह मानसिक रूप से कमजोर भी हो सकता था। जुहू निवासी पायल सुवनम ने राहुल के जन्म के दो दिन बाद ही न्यू बोन स्क्रीनिंग कराई। दो दिन बाद आई रिपोर्ट में पता चला कि राहुल का टीएसडी लेवल सामान्य से 25 प्रतिशत ज्यादा है। इस कारण वह सामान्य बच्चों की तरह बढ़ नहीं पाता और दिमागी रूप से भी कमजोर होता।

**पनपने से पहले पता चलेगी बीमारी:** अंकुर अस्पताल के गाइनेकोलॉजिस्ट का कहना है कि लोगों को इस टेस्ट के प्रति जागरूक करना होगा ताकि बच्चों को स्वस्थ भविष्य दिया जा सके। उन्होंने बताया, 'बच्चे के तलवे से रक्त की कुछ बूंदों के सैंपल बेंगलुरु के लैब में भेजे जाते हैं। सैंपल से बच्चे में एमएसयू, पीकेयू व टीएसडी सहित 57 टेस्ट किए जाते हैं, जिससे बच्चे की मानसिक व शारीरिक बीमारियों का पता लगता है। मुंबई में टेस्ट करने वाली कंपनी बेबी सेल के चीफ साइंटिस्ट सत्येन संघवी बताते हैं, 'हर हजार में से एक बच्चा बीमारी के साथ पैदा होता है। यह टेस्ट बीमारी के पनपने से पहले ही पहचान कर इलाज करने में बेहद मददगार साबित हो रहा है।'